गुजरात चुनाव: जीत से कहीं बड़ी चुनौती!

मज़दूर मोर्चा दिल्ली ब्यूरो

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हिला कर रख दिया होगा। कहां तो दावे 150 सीट पार करने के थे और कहां पहली बार 22 साल में भाजपा की सीटें दो अंकों में पहुंच गयी।

यह भी कहा जा सकता है कि पाकिस्तान का मुद्दा हद से हद इतनी ही सीटें दिला सकता था। यानी इन नतीजों में चेतावनी साफ़ दिख रही है कि मोदी जी या तो सचमुच 'विकास' दिखाओ अन्यथा मुंह की खाने में देरी नहीं है।

मोदी ने न सिर्फ़ पार्टी बल्कि पूरी भारत सरकार चुनाव में झोंक रखी थी। यहां तक कि चिरपरिचित जमूरेबाजी के साथ-साथ रोने-गरियाने तक पर उतर आये थे। एक बार तो लगा कि भाजपा का पारम्परिक वोट बैंक, बनिया और सवर्ण समुदाय भी न उसे छोड़ जाय। अन्ततः उनका समर्थन बने रहने से ही पार्टी की वापसी सम्भव हो सकी।

एक और बड़ी भूमिका मायावती ने निभाई। उनकी पार्टी बसपा ने जिन 28 सीटों पर चुनाव लड़े उनमें से 10 पर कांग्रेस एक हजार से भी कम वोटों से हारी। यदि ये उम्मीदवार न होते तो इन वोटों का कांग्रेस में जाना तय था। जाहिर है मायावती के सिर पर लटकती सीबीआई की तलवार ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई।

जीत-हार के समीकरण से भी कहीं बढ कर मोदी और भाजपा के लिये चिंता का विषय है राहुल गांधी का नया अवतार। कहां तो कांग्रेस-मुक्त भारत की स्थिति आ रही थी और कहां मोदी के गृह राज्य में ही इस पार्टी की जोरदार वापसी हो गयी। अगले वर्ष कर्नाटक, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, राजस्थान विधान सभाओं के चुनाव होने हैं। मौजूदा रूझान कांग्रेस के मजबूत होने का उतना नहीं है जितना मोदी के कमज़ोर होने का। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि नोटबंदी और जीएसटी की असली मार तो अब आने वाली है। दूसरी तरफ़, मोदी सरकार की प्रशासनिक क्षमता पर लगातार प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं। यदि उपरोक्त 4 राज्यों में राहुल गांधी की कांग्रेस 2 या 3 राज्य निकाल ले गयी तो कांग्रेस के नेतृत्व में एक बड़ा गठबंधन 2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी को चुनौती देगा। रोज़गारपरक विकास के अभाव में तब न 'पाकिस्तान' मोदी को बचा पायेगा और न ही साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद का हव्वा।

प्रायः यह आशंका जताई जाती है कि सामने हार खड़ी देख कर मोदी को हिटलर की तरह तानाशाही लादने की सूझ सकती है। हालांकि हिटलर के बाद 75 सालों में दुनिया बहुत बदल चुकी है। भारतीय लोकतंत्र की जड़ें इतनी गहरी हैं, यह आपातकाल के दौर में देखा जा चुका है। उसी तर्ज पर मोदी के फ़ासीवादी दुःसाहस को भी मुंह की खानी पड़ेगी।

हालांकि इस चुनाव में गुजराती मतदाता ने काफ़ी परिपक्वता का परिचय दिया है। वह भाजपा से तो परेशान था ही परन्तु कांग्रेसी राज के कटु अनुभवों को भी वह भुला नहीं। इसी के चलते देश में पहली बार किसी एक राज्य में साढे पांच लाख से अधिक मतदाताओं ने 'नोटा' को प्रयोग किया। यानी इतने मतदाताओं ने भाजपा को तो अस्वीकार किया ही कांग्रेस को भी पसंद नहीं किया। यदि कहीं ये वोट कांग्रेस को मिल में गये होते तो भाजपा का सत्ता से बेदखल होना निश्चित था।

राजसमंद के शंभूलाल रैगर तो पीएम मटेरियल से कम नही

कुछ लोग तो कहने भी लगे हैं पहले अटल आये फिर मोदी आये फिर योगी आये अब शंभूलाल रैगर आ गए है,

वाकई गांधी के देश मे शंभूलाल का उदित होना एक ऐतिहासिक घटना है, बताइये गांधी कैसी फालतू बाते करते थे कहते थे, 'मैं सनातनी हिंदू हूं। इसलिए मैं मुसलमान, ईसाई, बौद्ध हूं।.....

विनोबा तो उनसे भी बड़े वाले निकले कहने लगे 'मैं हिंदू हूं' यह कहना सही है, लेकिन 'मैं मुसलमान नहीं हूं' यह कहना गलत है। मैं हिंदुस्तान में रहता हूं, यह सही है। तो भी इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि 'मैं तुर्कस्तान में नहीं रहता'। मैं जिस जगत में रहता हूं, तुर्कस्तान भी उसी का एक अंग है। इसलिए मैं तुर्कस्तान में भी रहता हूं। लेकिन मेरी जिम्मेदारी उठाने की शक्ति अल्प है, इसलिए मैं अपने आप को हिंदुस्तानी कहता हूं, स्वामी विवेकानंद भी कैसे बोड़म आदमी थे कहने थे 'धर्म सब सत्य नहीं है, सब धर्मों में सत्य है।'

बताइये कैसे अल्पज्ञ ओर मूढ़मति लोगो को हमने 70 सालो तक अपने सिरमाथे पर बैठाए रखा, मै तो कहता हूँ महात्मा गांधी की मूर्ति ..... अरे माफ कीजिए कहा का महात्मा ,..... गांधी बुड्ढे की मूर्ति हटाकर माननीय शम्भू लाल रैगर की मूर्ति लगवा दीजिये ओर सभी नगरो के प्रमुख मार्गो के नाम महात्मा गांधी मार्ग से बदल कर शंभूलाल रैगर मार्ग रख दीजिए सुबह सुबह हमारे बच्चे उसी मार्ग से स्कूल जाएंगे, कितने भले लगेंगे.....

शायद कुछ दिनों में 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में भी महत्वपूर्ण बदलाव हो जाएगा

'मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेक
हिंदुत्व की रक्षा करने
जिस पथ पर जाए
शंभूलाल जैसे वीर अनेक'

राजस्थान में हत्यारे-रैगर का जश्न मनाता हिन्दुत्व आतंक, केरल में लव-जिहाद की आड़ में प्रेमी युगल के शादी, के अधिकार में एनआईए के दखल पर ठप्पा लगाती सुप्रीम कोर्ट! क्या हिन्दुत्ववादी गिरोह भाजपाई नेताओं के मामले में भी लव-जिहाद का खूनी मुद्दा उठायेंगे? क्या सुप्रीम कोर्ट इन मामलों में भी एनआईए से जांच का आदेश देगी?

दशकों तक जनसंघ/भाजपा का मुस्लिम चेहरा रहे सिकंदर बख्त ने राज शर्मा से शादी की थी। मोदी सरकार में मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी की शादी विश्व हिन्दू परिषद के सर्वेसर्वा रहे अशोक सिंघल की बेटी सीमा से हुई है। इसी तरह भाजपा के पूर्व केन्द्रीय मन्त्री और अब राष्ट्रीय प्रवक्ता सैयद शाह नवाज हुसैन ने रेणु शर्मा से विवाह किया है। यहां तक कि हिन्दू हृदय सम्राट के रूप में विख्यात शिव सेना सुप्रीमो बाल ठाकरे की पोती का विवाह भी एक मुश्लिम युवक से हुआ है। सुब्रह्मण्यन स्वामी जो भाजपा की सबसे जहरीली हिंदुत्ववादी जबान के लिये जाने जाते हैं, की बेटी की शादी पूर्व विदेश सचिव सलमान हैदर के बेटे से हुई है। भाजपा के लौह-पुरुष एलके आडवाणी की भतीजी ने भी एक मुस्लिम युवक से विवाह किया है। क्या इनके विरूद्ध भी रैगरो की हिम्मत है कुछ कर पाने की?

गतांक की चीर-फ़ाड़

डा. जुगल किशोर गुप्ता

मास्टरों की कमी दूर करने का नायाब तरीका व नोटबंदी का गुणगान

मज़दूर मोर्चा के 16-31 दिसम्बर 2017 के अंक में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर लेख पढ़ने को मिले। विभागीय भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी व अनैतिकता पर लगाम लगाने के लिये पुलिस द्वारा अहम् भूमिका अदा करने की आशा की जाती है। परंतु पुलिस विभाग स्वयं में ही भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी व अनैतिकता का बोलबाला है तथा सरकार, नेताओं व दबंगों के दबाव व रिश्वत के बलबूते पर निर्दोष को दोषी बनाने और दोषी को बरी करने में पुलिस को कोई हिचक नहीं होती। इसके अतिरिक्त विभागीय जांच के नाम पर भी अधिकारियों व सम्बन्धित कर्मचारियों द्वारा लूट-पाट की जाती है जिसका 'विभागीय जांच के नाम पर लूटते हैं अधिकारी' - हरियाणा पुलिस के खुर्द-बुर्द केस को सीबीआई ने खोजा तो डीसीपी सहित 9 पुलिसिये आये लपेटे में', 'रिश्वतखोरी का इतिहास रहा है आईपीएस विनोद कौशिक का' तथा 'विभागीय जांच छोटे पुलिसकर्मियों को निचोड़ने का और' लेखों में पूरा पर्दाफ़ाश किया गया है।

यह रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अनैतिकता व लूट-पाट का बाजार केवल पुलिस विभाग में ही नहीं बल्कि कमोबेश सभी विभागों का यही हाल है। यह अलग बात है कि प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री खट्टर भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी पर नियंत्रण करने का खोखला दावा करते हें। देश में यह हालत अब 21 शताब्दी में है जबकि फ्रांस में 18 वीं शताब्दी में यही हाल था। उस समय की एक कमिशन की रिपोर्ट में लिखा था कि ''सरकार का कोइ भी भाग घूसखोरी तथा अनैतिकता से मुक्त नहीं था''। केन्द्र सरकार व हरियाणा सरकार जनता को पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने से पीछे हट रही है। सरकारें अपने बजट में स्वास्थ्य के मद पर धन राशि आबंटन करने में कटौती करती रहती है जिससे सरकारी अस्पताल, डिस्पेंसरी, ईएसआई हेल्थकेयर तथा राष्ट्रीय हेल्थ मिशन (एनएचएम) में पर्याप्त सुविधाओं जैसे डॉक्टर, अन्य स्टाफ़, उपकरण व उपयुक्त आवश्यक भवन का अभाव रहता है जिसका, 'कागजी साबित हो रहा है बीके का हाई रिस्क यूनिट' 'एनएचएम: की हड़ताल में जनता त्रस्त, खट्टर सरकार मस्त' लेखों में पूरा विवेचन किया गया है। सरकारी चिकित्सा संस्थानों में इस बदहाली का परिणाम है प्राइवेट अस्पतालों का पनपना जहां महंगे इलाज के कारण आम आदमी के लिये अपना इलाज करवाना मुश्किल होता है। परंतु मुख्यमंत्री, अन्य मन्त्री व विधायक तथा नेता किसी न किसी बहाने उन प्राइवेट अस्पतालों में जाकर गठजोड़ है और आम लोग पिसते रहें इसकी इनको कोई परवाह नहीं।

जब भी लोक सभा अथवा राज्यों की विधान सभा के चुनाव होते हैं तब चुनाव विश्लेषक विभिन्न राजनीतिक दलों का ओपिनियन पोल व एक्जिट पोल के ज़रिए अपने-अपने पूर्वानुमान घोषित करते हैं जो कभी-कभी ठीक निकलते हैं परन्तु अक्सर ये गलत साबित होते हैं। गुजरात व हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में एक्जिट पोल में लगाया गया अनुमान गलत निकला। टाइम्स नाऊ-वीएमआर, टूडे चाणक्य-न्यूज 24, एबीपी-सीएसडीएस, न्यूज एक्स-सीएनएक्स, न्यूज नेशन, इंडिया टूडे-एक्सिस व टीवी 9-सी वोटर आदि एजिसियों ने गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को 110 से ऊपर सीट का अनुमान घोषित किया था जबकि चाणक्य व न्यूज नेशन ने तो भाजपा की 135 से भी ऊपर सीटों का अनुमान बताया था तो भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमितशाह ने अपने सर्वे के अनुसार भाजपा की 150 सीटें बताई थी। परन्तु चुनाव परिणाम के अनुसार भाजपा को केवल 99 सीटें मिली जबकि पिछली विधानसभा में उसके पास 115 सीट थी। हां उनका एक पूर्वानुमान ठीक निकला कि गुजरात में सरकार किसी तरह भाजपा की बन गई। पूर्वानुमान के विपरीत कांग्रेस को 80 सीट मिली जबकि पिछली विधानसभा में कांग्रेस के पास 61 सीट थी। मज़दूर मोर्चा के लेख 'गुजरात : शाह का दावा 150 सीटों का, संकट 50 आने का' का पूर्वानुमान बिल्कुल गलत निकला।

पचास वर्ष पहले 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी इलाके में बटाईदारों को फ़सल का दो तिहाई देने आदि की मांग को लेकर उठे किसान उभार को संगठित किया गया जिसको किसान वर्ग का व्यापक समर्थन मिला था। इस आन्दोलन को नक्सलबाड़ी आन्दोलन कहा गया। इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को आदिवासियों का भी समर्थन मिला लेकिन इस नक्सलबाड़ी आन्दोलन को विभिन्न चुनौतियों व शासकों के दमन का सामना करना पड़ा, जिसका लेख 'नक्सलबाड़ी के 50 साल: विरासत और चुनौतियां' में पूरा विवेचन किया गया है।

संघ परिवार ने 1992 में बाबरी मस्जिद को गिरा दिया था, जिसके परिणामस्वरूप अनेक साम्प्रदायिक दंगे हुए और अनेक निर्दोष लोगों की जान गई। कारपोरेट मीडिया (समाचार पत्र व टेलिविजन चैनल) ने इसको साम्प्रदायिक कवरेज दिया और सारे वातावरण को जहरीला बना दिया। सुप्रीम कोर्ट में बाबरी मस्जिद प्रकरण में सुनवाई शुरू होने पर कारपोरेट मीडिया ने सारे देश में भय का वातावरण बना दिया, जिसका लेख 'बाबरी मस्जिद विध्वंश के कवरेज से उठे सवाल' में सटीक विश्लेषण ही किया गया है। हाल ही में हुए गुजरात विधानसभा का चुनाव जितने के लिये इस मुद्दे पर संघ परिवार द्वारा साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने का प्रयास किया गया। महान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह ने ठीक ही कहा था कि साम्प्रदायिक दंगों को भड़काने में अखबार वाले विशेष हिस्सा लेते हैं और इन दंगों के पीछे साम्प्रदायिक नेताओं और अखबारों का हाथ हैं। अन्य प्रकाशित सभी लेख उच्च स्तरीय व प्रशंसनीय हैं।